ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-२
दिनांक-मंगलवार,७ जनवरी,२०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः १८.४ एवं १०.१ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९३ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ८१ प्रतिशत, हवा की औसत गति ४.८ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ०.८ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ०.२ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १४.१ एवं दोपहर में १९.१ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा, सुबह में कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(८-१२ जनवरी,२०२०)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी ८-१२ जनवरी,२०२० तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में हल्के बादल छाये रहने का अनुमान है। पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से अगले ८-९ जनवरी में गरज वाले बादल एवं कहीं-कहीं हल्की वर्षा/बूंदा-बूंदी की संभावना है। १० जनवरी से पुनः मौसम के आमतौर पर शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान १८ से २० डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान ७ से ९ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- अगले २-३ दिनों में पूरवा हवा तथा उसके बाद पछिया हवा चलने की संभावना है। इस दौरान हवा की रफ्तार औसतन ५ से ८ कि०मी० प्रति घंटा रह सकती है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ९० से ९५ प्रतिशत तथा दोपहर में ६० से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- अगले ८-९ जनवरी में हल्की वर्षा की संभावना को देखते हुए कृषि कार्यो जैसे कीटनाशक दवा के छिड़काव में सावधानी बरतें। फिलहाल फसलों की सिंचाई स्थगित रखें। रबी फसलों जैसे-मक्का, गेहूँ, लहसुन, पिछात मटर, दलहनी एवं चारा की फसलों में नत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें।
- गेहूँ में उगने वाले खरपतवार के नियंत्रन हेतु पहली सिंचाई के १० दिनों बाद अथवा बोआई के ३० से ३५ दिनों पर सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में छिड़काव करें। गेहूँ के साथ यदि सरसों, सुर्यमुक्खी, मटर अथवा चौड़ी पत्तियो वाले फसल बोयी गई हो तो इन दवाओ का छिड़काव नहीं करें।
- चने की फसल में सूंडी कीट की निगरानी करें। यह कीट प्रारम्भ में पत्तियों तथा कोमल टहनियो को नुकसान करती है तथा बाद में चने की फलियों में छेद करके अन्दर प्रवेश कर जाती है और दानों को खाकर खोखला कर देती है, जिससे उपज में काफी कमी आती है। यह कीट दिन में भी पौधे में लगी फलियों में आधी घुसी हुई और आधी लटकी हुई देखा जा सकता है। इससे बचाव हेतु खेतो के पास प्रकाश प्रपंच लगाकर प्रौढ़ कीटो को आकर्षित कर तथा नष्ट कर इसकी संतति को कम किया जा सकता है। फिरोमोन प्रपंश @ ३-४ प्रपंस प्रति एकड़ की दर से लगायें। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पेनोसेड १ मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सब्जियों वाली फसल में निकाई-गुड़ाई करें। मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें। इस रोग में पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से वचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का १.० मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का ३ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। मटर में नियमित रुप से फली छेदक कीट की निगराणी करें।
- आलू,टमाटर,लहसून एवं अन्य रबी फसलो में झुलसा रोग की निगरानी करें। यह रोग बदलीनुमा मौसम तथा वतावरण में नमी रहने पर काफी तेजी से फैलती है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व सिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर २.५ ग्राम डाई-इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना छिड़काव करें। इस छिड़काव के ८-१० दिनों बाद पुनः रीडोमिल दवा का १.५ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें।
- टमाटर की फसल में फली छेदक कीट के नियंत्रण हेतु फिरोमोन प्रपंश @ ३-४ प्रपंस प्रति एकड़ लगायें। फल छेदक कीट से ग्रसित फलो को इकठा कर नष्ट कर दें।
- मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुद्दे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में फोरेट १० जी० या कार्बोफ्यूरान ३ जी० का ७-८ दाना प्रति गाभा प्रति पौधा दें। फसल में अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन २५०-३०० मि०ली० प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित रुप से निगरानी करे। यह सुक्ष्म आकार का कीट पौधो के सभी मुलायम भागो-तने व फलीयों का रस चुसते है। ये कीट मधु-स्त्राव निकालते है, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह-जगह काले धब्बे दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों में शाखाएँ कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सुखने लगते है। फलीयाँ कम लगती है तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमेथोएट ३० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- दुधारु पशुओं में डेगनाला बीमारी की संभावना नवम्बर से फरवरी माह के बीच रहती है। यह बीमारी पशुओं को फफुंदयुक्त पुआल खाने से होता है। फफुंदयुक्त पुआल खाने से पशुओं में सेलेनियम विषाक्तता उत्पन्न हो जाती है। इस बीमारी के लक्षण में दुधारु पशुओं के थन एवं पूंछ का सड़ना पाया गया है। इससे बचाव के लिए १.० ग्राम सोडियम हाईड्रक्साइड को ४०० मि०ली० पानी में घोल कर उसे २० किलोग्राम पुआल पर छिड़काव कर पशुओं को खिलाये। साथ में २०० ग्राम तीसी तथा २०० ग्राम छोवा या गुड़ मिलावे। इस बीमारी के उपचार के लिए बीमार पशुओ को पेन्टासल्फ दवा ६० ग्राम पहले दिन खिलाये तथा उसके बाद १५ दिनों तक ३० ग्राम खिलाये।

आज का अधिकतम तापमानः १९.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से २.८ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः ७.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.३ डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकार